केन्द्राधिपत्य दोष

• सुशील अग्रवाल

अर्थ एवं आधार : 'केन्द्राधिपति' का शाब्दिक है केन्द्र भावों का स्वामी अर्थात् लग्नेश, चतुर्थेश, सप्तमेश और दशमेश। केन्द्राधिपति दोष का आधार बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, योग-कारकाध्याय, श्लोक 2 की निम्न पंक्ति है :

केन्द्राधिपत्यः सौम्या न दिशन्ति शुभं फलम्।

लघुपाराशरी ने इसे अधिक स्पष्ट रूप में कारिका 10-11 के माध्यम से कहा :

केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः
मारकत्वेऽपि च तयोर्मारकस्थानसंस्थितिः।।10।।
बुधस्तदनु चन्द्रेऽपि भवेत्तदनु तद्विधः।
न रन्ध्रेशत्वदोषस्तु सूर्यचन्द्रमसोर्भवेत्।।11।।

गुरु और शुक्र का केन्द्राधपति होने का दोष बलवान् होता है। मारकेश होकर मारक भाव में स्थित होने पर यह दोष विशेष बली होता है। बुध और चन्द्र में यह दोष क्रमशः कम होता है। सूर्य और चन्द्र को अष्टमेश होने का दोष नहीं होता।

व्याख्या एवं उदाहरण : केन्द्राधपति दोष को सही रूप में समझने के लिए कुछ ज्योतिषीय नियमों को सूचीबद्ध कर लेते हैं :

1. गुरु और शुक्र पूर्ण रूप से नैसर्गिक शुभग्रह हैं। बुध और चन्द्र को शुभ होने के लिए शर्त पूरी करनी पड़ती है। जैसे - बुध यदि अकेले हों या अशुभ रहित हों, तो ही नैसर्गिक शुभ माने जाते हैं। इसी प्रकार, चन्द्रमा पक्षबली होने पर ही नैसर्गिक शुभ माने जाते हैं।

2. बृहत्पाराशरहोराशास्त्र और लघु पाराशरी के अनुसार, केन्द्र भावों के स्वामी तटस्थ फलप्रद होते हैं।

3. जातक को प्राप्त फलों में निम्नलिखित तीन अवयवों का मिश्रण होता है :

(क) **साधारण फल** : ग्रहों के नैसर्गिक स्वभाव और कारकत्वों से उनके दशाफल प्रभावित होते हैं। ऐसे

फलों को महर्षि पाराशर ने साधारण फल कहा है।

(ख) **स्थानादिवश विशिष्ट फल** : ग्रह अपने भाव-स्वामित्व के आधार पर विशिष्ट फल देते हैं। भावेशों के मध्य बनने वाले योगों और भाव-स्वामित्व के आधार पर फलों की शुभता और अशुभता निर्धारित होती है।

(ग) **फलों की मात्रा** : ग्रहों के उपर्युक्त साधारण और विशिष्ट फलों को शुभाशुभता ज्ञात करने के पश्चात् दशाफलों की मात्रा का निर्धारण ग्रहों के बलानुसार किया जाता है।

बृहत्पाराशरहोराशास्त्र और लघु पाराशरी के अनुसार केन्द्र स्वामियों के स्थानादिवश विशिष्ट दशाफल तो तटस्थ हो गए, इसीलिए ग्रहों का नैसर्गिक स्वभाव एवं कारकत्व का ही फल मिल पाएगा। सभी बारह लग्नों की कुण्डलियों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकलता है :

(अ) द्विस्वभाव लग्न (मिथुन, कन्या, धनु, मीन) में केन्द्राधिपति दोष सबसे अधिक लगता है, क्योंकि केन्द्र भावों के सभी स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह होते हैं।

(ब) द्विस्वभाव लग्नों से कम केन्द्राधिपति दोष मेष, मकर और कुम्भ लग्नों में लगता है, क्योंकि तीन केन्द्र स्वामियों में से दो स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह होते हैं।

(स) सबसे कम केन्द्राधिपति दोष कर्क, सिंह, तुला और वृश्चिक लग्नों में लगता है, क्योंकि तीन केन्द्र स्वामियों में से केवल एक ही केन्द्र स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह होता है।

द्विस्वभाव लग्नों में सर्वाधिक केन्द्राधिपति दोष लगने का अर्थ यह कतई नहीं लगाना चाहिए कि द्विस्वभाव लग्न वाले जातक सुखों से सदैव वंचित रहेंगे। जातक को ग्रहबल के अनुसार नैसर्गिक शुभाशुभता के स्वभाववश और कारक सम्बन्धित फल तो अवश्य मिलेंगे। इसके अतिरिक्त केन्द्राधिपत्य दोषयुक्त भावेश के फलों में न्यूनाधिकता ग्रहबल से आती है। मान लीजिए कि मिथुन लग्न में गुरु उच्चस्थ हैं, तो ऐसा जातक बहुत ज्ञानी, शिक्षित आदि होगा और यदि गुरु का बुध से भी सम्बन्ध हो, जाए तो जातक पढ़ाई में उत्कृष्ट, व्यवसाय करने को उत्सुक, शिक्षा संस्थानों में कार्यरत, सलाहकार आदि होते हैं। तात्पर्य यह है कि सम्बन्धों के आधार पर और नैसर्गिकता एवं कारकत्व के फल बलाबल अनुसार दशा आने पर अवश्य मिलेंगे।

आइए, कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं :

उदाहरण 01 : मदर टेरेसा

जन्म दिनांक : 26 अगस्त, 1910

जन्म समय : 14:25 बजे

जन्म स्थान : 21पू29 42उ00

जन्मकुण्डली

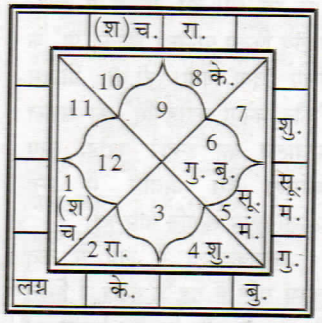

यह कुण्डली माननीया मदर टैरेसा की है, जो मानव एवं समाज सेवा की अप्रतिम मिसाल रही हैं। सप्तमेश तथा दशमेश की सुदृढ़ स्थिति के बावजूद सप्तम ।और दशम भाव के सांसारिक सुखों से वंचित रहीं। चतुर्थ भाव के बली होने के बावजूद वह जन्मस्थल से दूर रहीं। अर्थात् बुध और गुरु ने अपना केन्द्राधिपति होने का पूर्ण प्रभाव दिखाया, परन्तु दोनों ग्रहों ने बली होने के कारण अपने स्वभाव एवं कारकत्वों के उत्कृष्ट फल भी दिए, जिससे उनके कर्मों में सम्पूर्ण त्याग की प्रधानता रही।

उदाहरण 02 : एक जातक

इस कुण्डली में सप्तमेश तथा दशमेश होने से गुरु केन्द्राधित्य दोषयुक्त है, इसलिए दशम एवं सप्तम भाव से सम्बन्धित फलों में कमी करेंगे। दशमेश की दशम पर दृष्टि होने से आजीविका सम्बन्धित फलों में

न्यूनता कम होगी।

जन्मकुण्डली

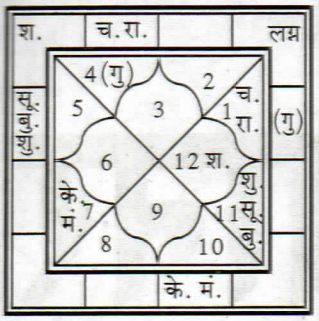

सप्तम भाव से सम्बन्धित फल जातक को कम मिले हैं। जैसा हम जिक्र कर चुके हैं कि ग्रह अपने नैसर्गिकता और कारकत्व के फल देते हैं। फलस्वरूप जातक पीएच.डी. हैं और शैक्षिक संस्थान में जुड़े हैं।

उदाहरण 03 : स्वामी विवेकानन्द
जन्म दिनांक : 12 जनवरी, 1863
जन्म समय : 06:33 बजे
जन्म स्थान : 88पू22, 22उ32

जन्मकुण्डली

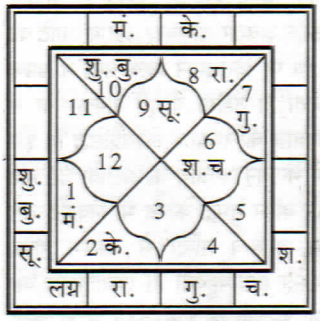

यह कुण्डली स्वामी विवेकानन्द की है, जो आध्यात्मिक उत्कृष्टता की एक मिसाल रहे हैं। उनके द्वारा रचित साहित्य जन-जन के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सप्तम भाव के सन्दर्भ में, स्वामी जी की शादी नहीं हुई। उन्होंने बहुत शीघ्र सांसारिक जीवन त्याग दिया था। दशमेश बुध ने दशम भाव से सम्बन्धित आर्थिक उन्नति भी नहीं दी। केन्द्राधिपति दोषयुक्त होने के कारण बुध के फल तो तटस्थ थे, परन्तु षष्ठेश-एकादशेश ने मिलकर उन्हें और अशुभ कर दिया। जातक घर से दूर रहे और चतुर्थ भाव के फलों में भी न्यूनता रही अर्थात् बुध और गुरु ने अपना केन्द्राधिपति होने के दोष का प्रभाव दिखाया। इस कुण्डली में भी बुध और गुरु ने स्वभाववश उत्कृष्ट फल प्रदान किए।

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त श्लोक में यह भी कहा गया है कि गुरु और शुक्र यदि मारकेश होकर मारक भाव में स्थित हों, तो उनका केन्द्राधिपति दोष प्रबल हो जाता है। बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, मारक-भेदाध्याय, श्लोक 2 के अनुसार, जन्मकुण्डली के सप्तम और द्वितीय भाव मारक भाव हैं। मिथुन लग्न के उपर्युक्त उदाहरण-2 में गुरु सप्तमेश होकर केन्द्रेश और मारकेश हैं तथा साथ ही मारक भाव (द्वितीय भाव) में स्थित भी हैं, अर्थात् गुरु उपर्युक्त तीनों शर्तें पूर्ण कर रहे हैं। ऐसी स्थिति ग्रह को प्रबल केन्द्राधिपति दोषयुक्त कर देती है। जातक उच्च शिक्षित तो है, परन्तु सामान्य कार्यरत है और सप्तम भाव से सम्बन्धित कोई भी सुख प्राप्त नहीं है, अर्थात् अविवाहित है और साझेदारी में प्रत्येक कार्य में असफल ही रहे हैं।

गुरु और शुक्र की स्थानादिवश फल देने की क्षमता बुध और चन्द्र से अधिक होती है, इसीलिए इनके केन्द्र स्वामी होकर तटस्थ होने पर कुण्डली अधिक प्रभावित होती है। इसी कारणवश गुरु और शुक्र का दोष बुध और चन्द्र की अपेक्षा अधिक माना जाता है।

केन्द्राधिपत्य दोष के सन्दर्भ में श्लोक में यह भी कहा गया है कि सूर्य और चन्द्र को अष्टमेश होने का दोष नहीं होता। सूर्य या चन्द्र का अष्टमेश होना केवल धनु लग्न (अष्टम में कर्क राशि) और मकर लग्न (अष्टम भाव में सिंह राशि) में ही सम्भव है। ज्योतिषीय ग्रन्थों में 'दोष नहीं लगने का' स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है, परन्तु अनुभवानुसार निम्न अर्थ तर्कसंगत हैं :

1. अष्टम भाव आयु भाव भी है। यदि सूर्य और चन्द्र अष्टमेश है, तो वे आयु का हरण नहीं करते।

2. यदि सूर्य या चन्द्र बली हों, तो शुभ फल भी मिल जाते हैं, परन्तु अष्टम भाव के फल मिलते समय उतार-चढ़ाव बाधा आदि का सामना भी करना पड़ता है।●

गुप्तनवरात्र (03-10 जुलाई, 2019) पर विशेष फलप्रद

दुर्गा का सार सर्वस्व है दुर्गाकवचेश्वर

शास्त्रों में दुर्गाकवचेश्वर अर्थात्
सबसे बड़ा दुर्गाकवच

इसके माध्यम से दुर्गा की उपासना से सभी मनोकामनापूर्ण होती हैं।
दुर्गा कवचेश्वर मन्त्रात्मक कवच है, जो दुर्गा का सारसर्वस्व है। इसी से ब्रह्मा, विष्णु, गणेश आदि को शक्ति प्राप्त हुई।

इसी दुर्गाकवचेश्वर की पूजा-उपासना पर आधारित है :

दुर्गाकवचेश्वर पैकेज

इसमें हैं :

- दुर्गाकवचेश्वर तावीज
- श्री दुर्गा यन्त्र
- रुद्राक्ष माला
- माँ दुर्गा का चित्र

मात्र **2100/-** में

घर बैठे प्राप्त करने हेतु फोन करें

09772333388, 09772333366

5 प्रतिशत वी.पी.पी. शुल्क अतिरिक्त देय। * यह पैकेज केवल दुर्गा जी की पूजा-उपासना से सम्बन्धित है।